क्या उम्रा के लिए शक्ति जुटाने हेतु यात्री अपना रोज़ा तोड़ सकता है?

[हिन्दी]

هل يفطر المسافر الذي وصل إلى مكة صائما من أجل التقوي على العمرة

[اللغة الهندية]

लेख

शैख़ मुहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन रहिमहुल्लाह

فضيلة الشيخ محمد بن صالح العثيمين رحمه الله

अनुवाद

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

ترجمة: عطاءالرحمن ضياء الله

संशोधन

शफीकुर्रहमान ज़ियाउल्लाह मदनी

مراجعة: شفيق الرحمن ضياء الله المدني

المكتب التعاوني للدعوة وتوعية الجاليات بالربوة

الرياض - المملكة العربية السعودية

इस्लामी आमन्त्रण एंव निर्देश कार्यालय रब्वा, रियाज़, सऊदी अरब

1429 - 2008

islamhouse.com

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो अति मेहरबान और दयालु है।

हर प्रकार की प्रशंसा सर्व जगत के पालन हार अल्लाह तआला के लिए योग्य है, तथा अल्लाह की कृपा एंव शांती अवतरित हो अन्तिम संदेष्टा मुहम्मद पर, तथा आप के साथियों, आप की संतान और आप के मानने वालों पर।

रोज़े की अवस्था में यात्री के मक्का पहुंचने और शक्ति जुटाने के लिए रोज़ा तोड़ देने के विषय में सऊदी अरब के एक महा विद्वान मुहम्मद बिन सालेह बिन उसैमीन रहिमहुल्लाह से पूछा गया यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जो पाठकों की सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा हैं, आशा है कि यह फत्वा संबंधित मस्अले की बाबत जानकारी प्राप्त करने में लाभदायक सिद्ध होगा। (अ.र.)

प्रश्न :

यात्री यदि रोज़े की अवस्था में मक्का पहुँचे तो क्या वह उमरा करने के लिए शक्ति जुटाने के लिए रोज़ा तोड़ देगा ?

उत्तर :

हम कहेंगे कि नबी ﷺ ने मक्का विजय होने के साल बीस रमज़ान को मक्का में प्रवेश किया और आप रोज़े से नहीं थे, और मक्का वालों को दो रकूअत नमाज़ पढ़ाते थे और उनसे कहते थे: **"ऐ मक्का वालो ! तुम पूरी नमाज़ पढ़ो, क्योंकि हम यात्रा में हैं।"**

तथा सहीह बुखारी में साबित है कि नबी ﷺ अवशेष महीना रोज़ा से नहीं थे, इसलिए कि आप यात्री थे, और उमरा करने वाले की यात्रा मक्का पहुँच कर समाप्त नहीं होजाती है, और न ही उस पर खाने पीने से रूक जाना अनिवार्य है यदि वह रोज़ा तोड़े हुए आया है। कुछ लोग यात्रा में भी अपना रोज़ा जारी रखते हैं, इस दृष्टकोण से कि वर्तमान युग में यत्रा में रोज़ा रखना उम्मत पर कठिन नहीं है। सो वह अपनी यात्रा में अपने रोज़े को जारी रखता है, फिर थका हारा मक्का पहुँचता है और दिल में सोचता है कि क्या मैं अपने रोज़े को बरक़रार रखूँ और रोज़ा खोलने तक उमरा को विलम्ब कर दूँ ? अथवा मैं रोज़ा तोड़ दूँ ताकि मक्का पहुँचते ही तुरन्त उमरा कर सकूँ ?

ऐसी स्थिति में हम उस से कहेंगे : श्रेष्ठ यह है कि तुम रोज़ा तोड़ दो ताकि तुम मक्का पहुँचने के तुरन्त पश्चात स्फूर्ति के साथ उम्रा कर सको; इसलिए कि किसी नुसुक अर्थात उम्रा या हज्ज की अदायगी के लिए मक्का आने वाले के लिए सुन्नत का तरीक़ा यह है कि वह अपने उस नुसुक (इबादत) की अदायगी के लिए जल्दी

करे। क्योंकि नबी ﷺ जब किसी नुसुक (हज्ज या उम्रा) के इरादे से मक्का में प्रवेश करते थे तो मस्जिद की ओर जल्दी करते थे, यहाँ तक कि आप अपनी सवारी को मस्जिद के (द्वार के) पास ही बैठा देते थे और उस नुसुक की अदायगी के लिए मस्जिद में प्रवेश कर जाते थे जिसके लिए आप इहराम बाँधे होते थे। अतः ऐ उम्रा करने वाले ! तेरा रोज़े को तोड़ देना ताकि तू स्फूर्ति के साथ दिन में उम्रा कर सके इस बात से उत्तम है कि तू रोज़े की हालत में बाक़ी रहे, फिर रात को रोज़ा खोलने के पश्चात उम्रा पूरा करे। नबी ﷺ के विषय में साबित है कि आप फत्हे मक्का की लड़ाई के अवसर पर अपनी यात्रा के दौरान रोज़े से थे, कि कुछ लोग आप के पास आये और कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर ! लोगों पर रोज़ा कठिन सिद्ध हो रहा है और वह इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि आप क्या करते हैं, यह अस्र के बाद का समय था, चुनाँचे आप ने पानी मंगाया और उसे पी लिया इस हालत में कि लोग आप को देख रहे थे। (**मुस्लिम हदीस न॰ 1114**)

इससे ज्ञात हुआ कि आप ﷺ ने यात्रा के दौरान रोज़ा तोड़ दिया, बल्कि दिन के अन्तिम भाग में रोज़ा तोड़ दिया। यह सब कुछ केवल इस कारण किया ताकि आप उम्मत के लिए स्पष्ट कर दें कि यह जायज़ है। तथा कुछ लोगों का कष्ट और कठिनाई के होते हुये यात्रा के दौरान रोज़ा रखना निःसन्देह सुन्नत के विरूद्ध है, और उस पर नबी ﷺ का यह फर्मान सत्य सिद्ध होता हैः

((ليس من البر الصيام في السفر))

"यात्रा में रोज़ा रखना पुण्य (नेकी) नहीं है।" (बुखारी हदीस न॰ 1946, मुस्लिम हदीस न॰ 1115)

अनुवादक
(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह**)***

atazia75@gmail.com *